Ask Your Solution Academy

कक्षा 11 | इतिहास (विश्व इतिहास के कुछ विषय) | विषय 5

बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ

पुनर्जागरण · मानवतावाद · धर्म-सुधार · वैज्ञानिक क्रांति





सचित्र नोट्स | समय-रेखा व तालिकाएँ | 20 MCQ | 1 · 2 · 4 · 6 अंक | केस आधारित | पाठ्यपुस्तक के उत्तर

द्वारा / शिक्षक

Suresh Raikwar

Founder – Ask Your Solution Academy

वेबसाइट : mcqwaale.in

★ अध्याय सूची (Index)

भाग A	सचित्र नोट्स – इटली के नगर, मानवतावाद, कला, मुद्रण, महिलाएँ, धर्म-सुधार, वैज्ञानिक क्रांति
भाग B	एक नज़र में – Quick Revision + समय-रेखा + प्रमुख व्यक्तित्व तालिका + तुलना
भाग C	20 बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) + उत्तर कुंजी
भाग D	1 अंक के प्रश्न-उत्तर
भाग E	2 अंक के प्रश्न-उत्तर
भाग F	4 अंक के प्रश्न-उत्तर + केस आधारित प्रश्न
भाग G	6 अंक के प्रश्न-उत्तर (भूमिका – बिंदु – निष्कर्ष)
भाग H	पाठ्यपुस्तक 'अभ्यास' के सभी 6 प्रश्न – उत्तर सहित
भाग I	क्रियाकलाप 1 से 4 – संकेत उत्तर
भाग J	रिक्त स्थान, सत्य/असत्य, मिलान

अध्ययन सुझाव

- पहले **चित्र/चार्ट** देखें, फिर नोट्स पढ़ें और **Quick Revision** से दोहराएँ।
- तिथियाँ और व्यक्तियों के नाम **समय-रेखा** और **तालिका** से याद करें।
- 6 अंक के उत्तर **भूमिका → बिंदु → निष्कर्ष** के क्रम में लिखें।
- और अभ्यास : **mcqwaale.in**

अध्याय की मूल भावना

14वीं से 17वीं शताब्दी के बीच यूरोप में **सोचने का तरीका बदला** – मनुष्य, धर्म, कला, ज्ञान और प्रकृति को देखने का नया नज़रिया उभरा। इसी बदलाव ने यूरोप को 'आधुनिक' युग की ओर बढ़ाया; साथ ही यह भी समझना ज़रूरी है कि इसमें **एशिया और अरब जगत** का भी बड़ा योगदान था।

A सचित्र नोट्स

1 14वीं–17वीं शताब्दी का यूरोप – एक परिचय

- 14वीं से 17वीं शताब्दी के अंत तक यूरोप के अनेक देशों में **नगरों की संख्या बढ़ी** और एक विशेष प्रकार की **'नगरीय संस्कृति'** विकसित हुई।
- नगर के लोग स्वयं को गाँव वालों से अधिक **'सभ्य'** मानने लगे। **फ़्लोरेंस, वेनिस और रोम** कला व विद्या के केंद्र बन गए।
- नगरों को राजा और चर्च से थोड़ी **स्वायत्तता (autonomy)** मिली। अमीर व अभिजात वर्ग कलाकारों व लेखकों के **आश्रयदाता (संरक्षक)** बने।
- **मुद्रण के आविष्कार** से दूर-दराज़ के लोगों तक भी छपी पुस्तकें पहुँचने लगीं।
- लोग अपने 'आधुनिक विश्व' की तुलना **यूनानी व रोमन 'प्राचीन दुनिया'** से करने लगे; माना जाने लगा कि हर व्यक्ति अपनी इच्छा से अपना धर्म चुन सकता है।
- वैज्ञानिकों ने चर्च की **पृथ्वी-केंद्रित धारणा को गलत** सिद्ध कर दिया और सौर-मंडल को समझना शुरू किया।

2 स्रोत और 'रेनेसाँ' शब्द

- इस काल की जानकारी **दस्तावेज़ों, मुद्रित पुस्तकों, चित्रों, मूर्तियों, भवनों और वस्त्रों** से मिलती है – जो यूरोप-अमरीका के अभिलेखागारों, कला-चित्रशालाओं और संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।
- 19वीं शताब्दी के इतिहासकारों ने सांस्कृतिक परिवर्तनों के लिए **'रेनेसाँ'** शब्द का प्रयोग किया – शाब्दिक अर्थ **पुनर्जन्म**, हिंदी में **पुनर्जागरण**।
- **जैकब बर्कहार्ट** (1818–97, बेसले विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड) ने इस पर बहुत बल दिया। वे जर्मन इतिहासकार **लियोपोल्ड वॉन रांके** (1795–1886) के विद्यार्थी थे।
- **रांके बनाम बर्कहार्ट**
  - रांके : इतिहासकार का पहला उद्देश्य **राज्यों व राजनीति** के बारे में लिखना – सरकारी फ़ाइलों के आधार पर।
  - बर्कहार्ट : इतिहास का सरोकार **संस्कृति से भी उतना ही** है जितना राजनीति से।

- 1860 में बर्कहार्ट ने **'द सिविलाइजेशन ऑफ़ द रेनेसाँ इन इटली'** लिखी – इसमें साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला और 14वीं–17वीं शताब्दी के इटली में पनपती **'मानवतावादी' संस्कृति** का वर्णन है।

बर्कहार्ट का निष्कर्ष

यह संस्कृति इस विश्वास पर आधारित थी कि **व्यक्ति अपने बारे में खुद निर्णय लेने और अपनी दक्षता बढ़ाने में समर्थ** है। ऐसा व्यक्ति **'आधुनिक'** था, जबकि **'मध्यकालीन मानव'** पर चर्च का नियंत्रण था।

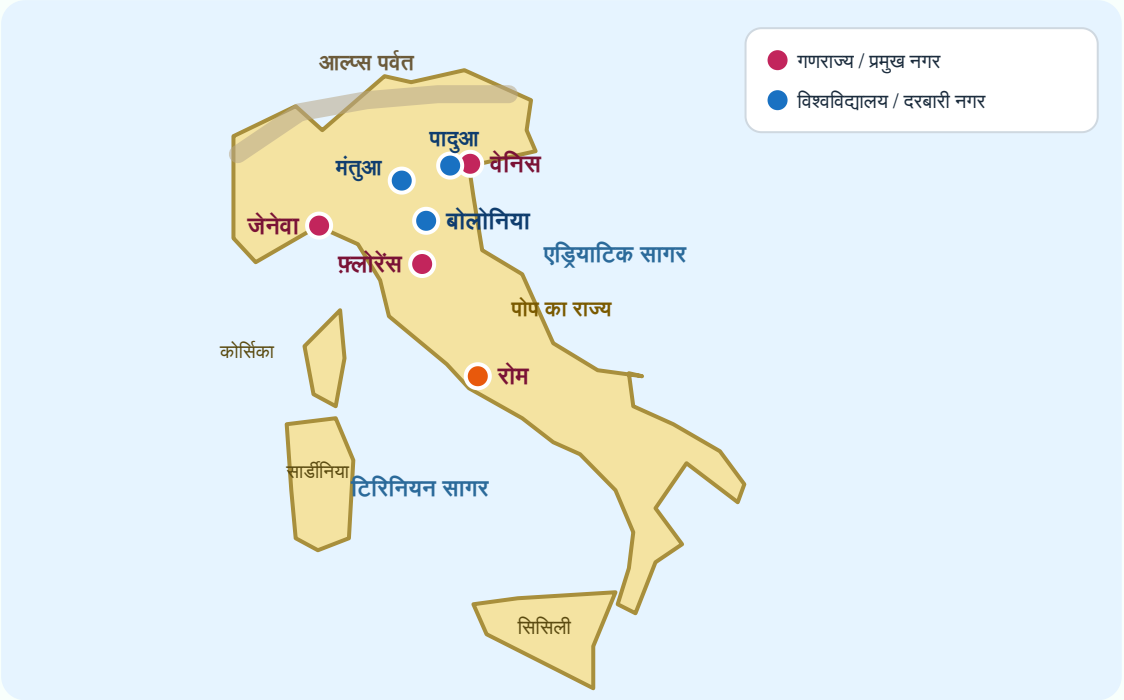
3 इटली के नगरों का पुनरुत्थान

- पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद इटली के **राजनैतिक व सांस्कृतिक केंद्र नष्ट** हो गए। कोई एकीकृत सरकार नहीं थी और रोम का पोप भी यूरोपीय राजनीति में इतना मज़बूत नहीं था।
- पश्चिमी यूरोप सामंती संबंधों और **लातिनी चर्च** के नेतृत्व में एकजुट हो रहा था; पूर्वी यूरोप **बाइज़ेंटाइन साम्राज्य** के अधीन था; दूसरी ओर **इस्लाम** एक साझा सभ्यता बना रहा था।
- इटली कमज़ोर और अनेक टुकड़ों में बँटा था – पर इन्हीं परिवर्तनों ने **इतालवी संस्कृति के पुनरुत्थान** में सहायता की।
- बाइज़ेंटाइन साम्राज्य और इस्लामी देशों के बीच व्यापार बढ़ने से इटली के **तटवर्ती बंदरगाह पुनर्जीवित** हुए। 12वीं शताब्दी से **मंगोलों** ने चीन से 'रेशम मार्ग' द्वारा व्यापार शुरू किया – इससे पश्चिमी यूरोप के व्यापार को भी बढ़ावा मिला।



चित्र 1 – इटली में पुनर्जागरण सबसे पहले क्यों शुरू हुआ ?

- इटली के नगर स्वयं को किसी साम्राज्य का अंग नहीं, बल्कि **स्वतंत्र नगर-राज्यों का समूह** मानते थे। **फ़्लोरेंस और वेनिस गणराज्य** थे; अन्य **दरबारी नगर** थे जिन पर राजकुमार शासन करते थे।
- **वेनिस और जेनेवा** सबसे जीवंत नगर थे। यहाँ **धर्माधिकारी और सामंत वर्ग राजनीतिक रूप से शक्तिशाली नहीं** थे; धनी व्यापारी और महाजन शासन में सक्रिय थे – इससे **नागरिकता की भावना** पनपी।
- सैनिक तानाशाहों के शासन में भी वहाँ के निवासी स्वयं को नगर का **नागरिक** कहने में गर्व अनुभव करते थे।



चित्र 2 – इटली के प्रमुख नगर-राज्य (योजनात्मक चित्र, पैमाने पर नहीं)

स्रोत – नगर-राज्य वेनिस (कार्डिनल गेसपारो कोन्तारिनी, 1534)

*'द कॉमनवेल्थ एण्ड गवर्नमेंट ऑफ़ वेनिस' में कोन्तारिनी लिखते हैं कि नगर का संपूर्ण प्राधिकार एक परिषद के हाथों में है, जिसमें **25 वर्ष से अधिक आयु के [संभ्रांत वर्ग के] सभी पुरुषों** को सदस्यता मिल जाती है। सामान्य जनता को नागरिक वर्ग में इसलिए शामिल नहीं किया गया क्योंकि उनके कारण गड़बड़ियाँ और जन-उपद्रव होते हैं। शासन-संचालन में **योग्यता और संपन्नता** को आधार बनाने पर ज़ोर दिया गया, पर यह भी कहा गया कि केवल उच्च अभिजात ही सत्ता में न रहें – गरीबों को छोड़कर सभी नागरिकों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए।*

4 विश्वविद्यालय और मानवतावाद

- यूरोप के **सबसे पहले विश्वविद्यालय इटली** के शहरों में बने। 11वीं शताब्दी से **पादुआ और बोलोनिया** विधिशास्त्र (कानून) के अध्ययन के केंद्र रहे।
- **कारण :** नगरों की मुख्य गतिविधि व्यापार थी, इसलिए लिखित अनुबंध बनाने वाले **वकीलों व नोटरी** की बड़ी माँग थी। कानून का अध्ययन अब **रोमन संस्कृति के संदर्भ** में होने लगा।
- **फ्रांचेस्को पेट्रार्क** (1304–1378) इस परिवर्तन के प्रतिनिधि थे। उनके लिए पुराकाल एक विशिष्ट सभ्यता थी, जिसे प्राचीन यूनानियों-रोमनों के **वास्तविक शब्दों** से ही समझा जा सकता है।
- **'मानवतावाद'** नाम 19वीं शताब्दी के इतिहासकारों ने दिया। 15वीं सदी के आरंभ में 'मानवतावादी' उन अध्यापकों को कहते थे जो **व्याकरण, अलंकारशास्त्र, कविता, इतिहास और नीतिदर्शन** पढ़ाते थे।
- लातिनी शब्द **'ह्यूमेनिटास'** (जिससे 'ह्यूमेनिटीज़' बना) का प्रयोग **सिसरो** (106–43 ई.पू.) ने 'संस्कृति' के अर्थ में किया था। ये विषय धार्मिक नहीं थे, बल्कि उस कौशल पर बल देते थे जो **चर्चा और वाद-विवाद** से विकसित होता है।



चित्र 3 – मानवतावाद : एक नज़र में

- **फ़्लोरेंस** भी मानवतावाद का केंद्र बना (वि.वि. की स्थापना – 1349)। 13वीं शताब्दी के अंत तक वहाँ कोई विशेष तरक्की नहीं थी, पर **15वीं शताब्दी में सब कुछ बदल गया**।
- फ़्लोरेंस की प्रसिद्धि में दो लोगों का बड़ा हाथ था – **दाँते अलिगहियरी** (1265–1321), जो किसी धार्मिक संप्रदाय से बँधे नहीं थे पर धार्मिक विषयों पर लिखा; और कलाकार **जोटो** (1267–1337), जिन्होंने **जीते-जागते रूपचित्र (Portrait)** बनाए।
- **'रेनेसाँ व्यक्ति'** उस मनुष्य को कहते हैं जिसकी अनेक रुचियाँ हों और अनेक हुनर में महारत हो – जैसे एक ही व्यक्ति विद्वान, कूटनीतिज्ञ, धर्मशास्त्रज्ञ और कलाकार हो सकता था।

स्रोत – वाद-विवाद का महत्त्व (पिको देल्ला मिरांदोला, 1486)

*फ़्लोरेंस के मानवतावादी **जोवान्नी पिको देल्ला मिरांदोला** (1463–94) ने **'ऑन दि डिग्निटी ऑफ़ मैन'** में लिखा – सत्य की खोज के लिए विचारगोष्ठियों में जाना और वाद-विवाद करना चाहिए। यह उसी तरह है जैसे शरीर को मज़बूत बनाने के लिए कसरत ज़रूरी है – दिमाग़ की ताक़त बढ़ाने के लिए शब्दों के दंगल में उतरना ज़रूरी है।*

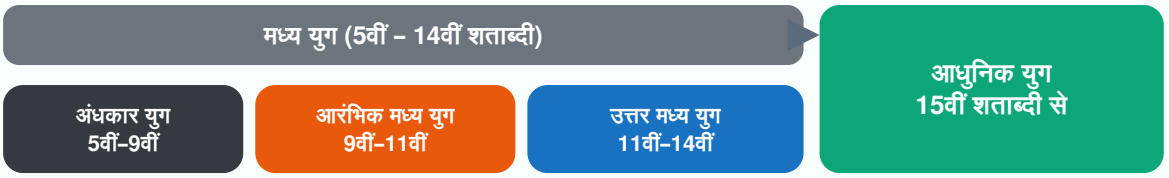
एक सोपान ऊपर – रेनेसाँ व्यक्ति का उदाहरण

लियोनार्दो दा विन्ची (1452–1519) – वनस्पति विज्ञान, शरीर रचना, गणित और कला – सबमें रुचि; 'मोना लीसा' और 'द लास्ट सपर' के रचयिता; उड़न-मशीन का प्रतिरूप बनाया; स्वयं को **'परीक्षण का अनुयायी'** कहा।

5 इतिहास का मानवतावादी दृष्टिकोण

- मानवतावादी मानते थे कि वे **अंधकार की कई शताब्दियों के बाद सभ्यता के सही रूप को पुनः स्थापित** कर रहे हैं। उनके अनुसार रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद **'अंधकार युग'** शुरू हुआ।
- बाद के विद्वानों ने भी बिना प्रश्न उठाए मान लिया कि 14वीं शताब्दी के बाद यूरोप में **'नया युग'** आया। 'मध्यकाल' शब्द रोमन साम्राज्य के पतन के बाद के **एक हज़ार वर्ष** के लिए प्रयुक्त हुआ और 'आधुनिक' शब्द 15वीं शताब्दी से शुरू होने वाले काल के लिए।

मानवतावादियों और बाद के विद्वानों का कालक्रम (Periodisation)



आज के कई इतिहासकार किसी भी काल को 'अंधकार युग' कहना अनुचित मानते हैं।

चित्र 4 – मध्य युग से आधुनिक युग तक : कालक्रम

ध्यान दें

हाल के इतिहासकारों ने इस काल-विभाजन पर **सवाल** उठाए हैं। शताब्दियों की सांस्कृतिक समृद्धि का अध्ययन करने पर किसी भी काल को '**अंधकार युग**' **कहना अनुचित** लगा।

6 विज्ञान और दर्शन – अरबों का योगदान

- मध्यकाल में ईसाई गिरजाघरों और मठों के विद्वान यूनानी-रोमन कृतियों से परिचित थे, पर उन्होंने इनका **प्रचार-प्रसार नहीं** किया।
- 14वीं शताब्दी में यूरोपीय विद्वानों ने **प्लेटो (अफ़लातून) और अरस्तू** के ग्रंथों के अनुवाद पढ़ना शुरू किया – इसके लिए वे **अरबी अनुवादकों के ऋणी** थे जिन्होंने पांडुलिपियों का संरक्षण और अनुवाद सावधानी से किया था।
- दूसरी ओर यूनानी विद्वान **अरबी व फ़ारसी विद्वानों** की कृतियों के अनुवाद यूरोप के लिए कर रहे थे – ये ग्रंथ **प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान और रसायन विज्ञान** से जुड़े थे।
- **टॉलेमी** के 'अलमजेस्ट' (खगोल शास्त्र का ग्रंथ, 140 ई. से पूर्व, यूनानी में) में अरबी उपसर्ग '**अल**' है – जो यूनानी–अरबी संबंध दर्शाता है।



विज्ञान · गणित · खगोल · औषधि · रसायन → यूरोप तक पहुँचे

'अलमजेस्ट' में 'अल' उपसर्ग यूनानी–अरबी संबंध का प्रमाण है।

चित्र 5 – ज्ञान की यात्रा : यूनान → अरब → यूरोप

- **इब्न सिना** (लातिनी में एविसिना, 980–1037), बुखारा (मध्य एशिया) के दार्शनिक और हकीम; **अल-राज़ी (रेज़ेस)** – आयुर्विज्ञान विश्वकोश के लेखक।
- **इब्न रूश्द** (लातिनी में अविरोज़, 1126–98), स्पेन के अरबी दार्शनिक – दार्शनिक ज्ञान (फ़लसफ़ा) और धार्मिक विश्वासों के तनाव को सुलझाने की कोशिश की; उनकी पद्धति को **ईसाई चिंतकों ने अपनाया**।
- इन नामों की **यूरोपीय वर्तनी** ने बाद की पीढ़ियों को यह सोचने पर विवश कर दिया कि वे यूरोपीय थे!
- विश्वविद्यालयों में कानून, आयुर्विज्ञान और धर्मशास्त्र का दबदबा रहा, फिर भी **मानवतावादी विषय धीरे-धीरे स्कूलों में पढ़ाए जाने लगे** – इटली ही नहीं, अन्य देशों में भी (उस काल के विद्यालय लड़कों के लिए थे)।

7 कलाकार और यथार्थवाद

- मानवतावादी विचारों को फैलाने में केवल औपचारिक शिक्षा ही नहीं – **कला, वास्तुकला और ग्रंथों** ने भी प्रभावी भूमिका निभाई।
- पुराने कलाकारों के चित्रों के अध्ययन से नए कलाकारों को प्रेरणा मिली। रोम साम्राज्य के पतन के हज़ार साल बाद भी **प्राचीन रोम के खंडहरों में कलात्मक वस्तुएँ** मिलीं। 1416 में **दोनातल्लो** (1386–1466) ने सजीव मूर्तियाँ बनाकर नई परंपरा शुरू की।
- **वेसेलियस** (1514–64, बेल्जियम मूल) पादुआ विश्वविद्यालय में आयुर्विज्ञान के प्राध्यापक थे – इन्होंने पहली बार सूक्ष्म परीक्षण के लिए मनुष्य के शरीर की **चीर-फाड़ (dissection)** की; इसी समय **आधुनिक शरीर-क्रिया विज्ञान (Physiology)** का प्रारंभ हुआ।
- **डयूरर** (1471–1528) का रेखाचित्र '**प्रार्थनारत हस्त**' (1508) – लोग गहन रूप से धार्मिक थे, पर उन्हें मनुष्य की योग्यता पर भरोसा था।
- चित्रकारों ने **रेखागणित** से **परिदृश्य (Perspective)** समझा और **प्रकाश** के गुणों के अध्ययन से चित्रों को **त्रि-आयामी** रूप दिया। लेपचित्र में **तेल के माध्यम** से चित्र अधिक रंगीन और चटख बने; चीनी-फ़ारसी चित्रकला का प्रभाव (मंगोलों से) भी दिखता है।

- शरीर विज्ञान + रेखागणित + भौतिकी + सौंदर्य की भावना से इतालवी कला को नया रूप मिला – जिसे बाद में **'यथार्थवाद' (Realism)** कहा गया। यह परंपरा 19वीं शताब्दी तक चली।

एक सोपान ऊपर – कलाकारों की कृतियाँ

कलाकार	प्रमुख कृति
लियोनार्दो दा विन्ची	मोना लीसा; द लास्ट सपर (1495)
माइकल एंजेलो	सिस्टीन चैपल की छत (1512); 'द पाइटा' (मरियम की गोद में ईसा का शरीर)
दोनातल्लो	सजीव मूर्तियाँ (1416)
जोटो	जीते-जागते रूपचित्र
डयूरर	'प्रार्थनारत हस्त' रेखाचित्र (1508)

8 वास्तुकला

- 15वीं शताब्दी में **रोम नगर भव्य रूप में पुनर्जीवित** हुआ। **1417** से पोप राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली बने (1378 में दो प्रतिस्पर्धी पोप के निर्वाचन से जन्मी दुर्बलता का अंत हुआ)।
- पुरातत्त्वविदों ने रोम के अवशेषों का सावधानी से उत्खनन किया। इससे वास्तुकला की **'नयी शैली'** को प्रोत्साहन मिला – रोमन साम्राज्य कालीन शैली का पुनरुद्धार, जिसे **'शास्त्रीय' शैली** कहा गया।
- पोप, धनी व्यापारी और अभिजात वर्ग ने शास्त्रीय वास्तुकला से परिचित **वास्तुविदों** को भवन बनाने के लिए नियुक्त किया। चित्रकारों व शिल्पकारों ने भवनों को लेपचित्रों, मूर्तियों और उभरे चित्रों से सजाया।
- **माइकल एंजेलो बुआनारोत्ती** (1475–1564) – चित्रकार, मूर्तिकार और वास्तुकार, तीनों। सिस्टीन चैपल की छत का लेपचित्र, **'दि पाइटा'** प्रतिमा और सेंट पीटर गिरजे के गुम्बद का डिज़ाइन – सब रोम में।
- **फिलिप्पो ब्रूनेलेशी** ने फ़्लोरेंस के भव्य गुम्बद **(डूओमो)** का परिरूप बनाया; उन्होंने पेशा मूर्तिकार के रूप में शुरू किया था।
- एक और बदलाव : कलाकार की पहचान अब **उसके अपने नाम** से होने लगी, न कि पहले की तरह उसके संघ या श्रेणी (**गिल्ड**) के नाम से।

स्रोत – लिओन बतिस्ता अल्बर्टी (1402–72)

कला-सिद्धांत व वास्तुकला पर लिखते हुए : 'मैं उसे वास्तुविद् मानता हूँ जो नए-नए तरीक़ों का आविष्कार कर इस तरह निर्माण को पूरा करे कि उसमें भारी वज़न ठीक बैठाया गया हो और संपूर्ण कृति का संयोजन व द्रव्यमान ऐसा तालमेल लिए हो कि उसका सर्वाधिक सौन्दर्य उभरकर आए और मानवमात्र के लिए श्रेष्ठ उपयोग हो सके।'

9 प्रथम मुद्रित पुस्तकें

- दूसरे देशों के लोगों को महान कलाकारों की कृतियाँ देखने इटली जाना पड़ता था, पर **साहित्य** (जो कुछ भी इटली में लिखा गया) विदेशों तक पहुँचा – **16वीं शताब्दी की क्रांतिकारी मुद्रण प्रौद्योगिकी** के कारण।
- मुद्रण प्रौद्योगिकी के लिए यूरोपीय लोग **चीनियों और मंगोल शासकों के ऋणी** थे – यूरोप के व्यापारी और राजनयिक मंगोल राज-दरबारों में अपनी यात्राओं के दौरान इस तकनीक से परिचित हुए। (आग्नेयास्त्र, कम्पास और फलक/Abacus के बारे में भी ऐसा ही हुआ।)
- पहले किसी ग्रंथ की कुछ ही **हस्तलिखित प्रतियाँ** होती थीं। **1455** में जर्मन **जोहानेस गूटेनबर्ग** (1400–58) ने छापेखाने का निर्माण किया – उनकी कार्यशाला में **बाईबल की 150 प्रतियाँ** छपीं। इतने समय में एक भिक्षु (Monk) बाईबल की केवल **एक** प्रति लिख पाता था।
- 15वीं शताब्दी तक अनेक **क्लासिकी (लातिनी) ग्रंथ** इटली में छप चुके थे। मुद्रित पुस्तकों के कारण छात्र केवल **व्याख्यानों के नोट्स पर निर्भर नहीं** रहे; विचार, मत और जानकारी पहले से तेज़ी से फैली।
- अब पाठक **एकांत में बैठकर** पुस्तकें पढ़ सकता था, क्योंकि वह उन्हें बाज़ार से खरीद सकता था – इससे लोगों में **पढ़ने की आदत** का विकास हुआ।
- 15वीं शताब्दी के अंत से इटली की मानवतावादी संस्कृति का **आल्प्स पर्वत के पार** बहुत तेज़ी से फैलना भी मुख्यतः **छपी पुस्तकों** के कारण हुआ।



चित्र 6 – मुद्रण क्रांति का प्रभाव

10 मनुष्य की एक नई संकल्पना

- मानवतावादी संस्कृति की एक विशेषता थी – **मानव जीवन पर धर्म का नियंत्रण कमज़ोर** होना। इटली के लोग **भौतिक संपत्ति, शक्ति और गौरव** से बहुत आकर्षित थे – पर ज़रूरी नहीं कि वे अधार्मिक हों।
- वेनिस के मानवतावादी **फ्रेन्चेस्को बरबारो** (1390–1454) ने संपत्ति अधिग्रहण को एक विशेष गुण कहकर उसकी तरफ़दारी की। **लोरेन्ज़ो वल्ला** (1406–57) ने अपनी पुस्तक **'ऑन प्लेज़र'** में भोग-विलास पर लगाई गई ईसाई धर्म की निषेधाज्ञा की आलोचना की।
- लोगों में **अच्छे व्यवहार** की रुचि बढ़ी – किसी से कैसे विनम्रता से बोलना चाहिए, कैसे कपड़े पहनने चाहिए और एक सभ्य व्यक्ति को किसमें दक्षता हासिल करनी चाहिए।
- मानवतावाद का अर्थ – व्यक्ति **सत्ता और दौलत की होड़ छोड़कर अन्य कई माध्यमों से** अपने जीवन को रूप दे सकता है। मनुष्य का स्वभाव **बहुमुखी** है – यह विचार सामंती समाज के तीन वर्गों (पादरी, सामंत, किसान) की धारणा के विरुद्ध था।

स्रोत – निकोलो मैक्यावेली, 'द प्रिंस' (1513)

*मैक्यावेली के अनुसार मनुष्यों में अनेक गुण-दोष देखे जाते हैं – कोई दानी तो कोई कंजूस, कोई दयालु तो कोई निर्दयी। उनका मानना था कि **'सभी मनुष्य बुरे हैं'** और कुछ हद तक इच्छाओं के अपूर्ण रहने पर दुष्ट स्वभाव प्रदर्शित करने को तत्पर रहते हैं। इसके पीछे का प्रमुख कारण : **मनुष्य अपने सभी कार्यों में अपना स्वार्थ देखता है।***

11 महिलाओं की आकांक्षाएँ

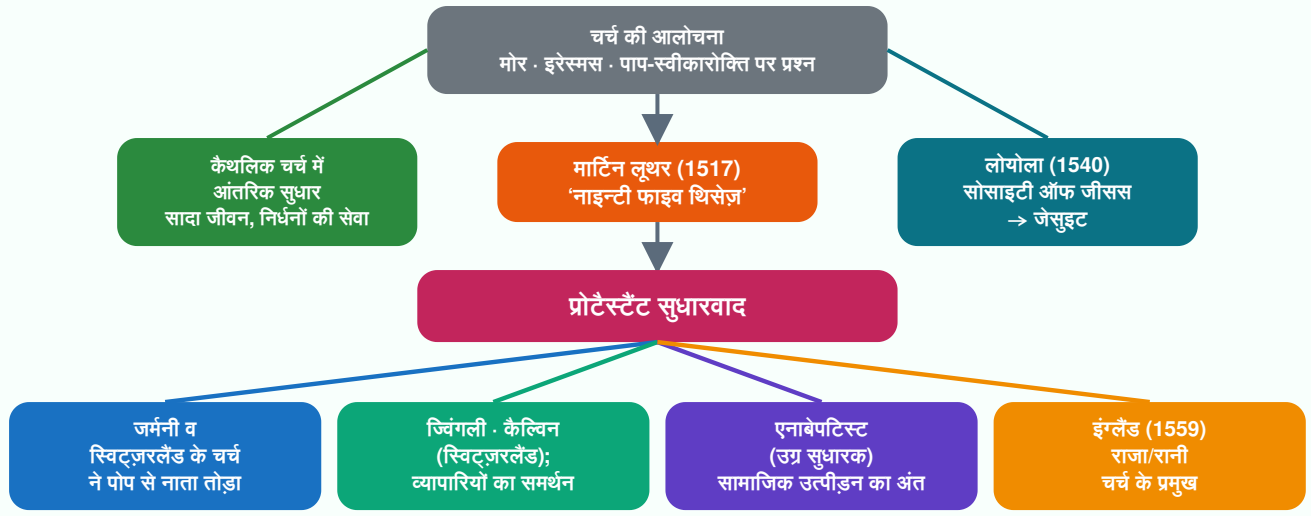
- वैयक्तिकता (individuality) और नागरिकता के नए विचारों से **महिलाओं को दूर रखा गया**। सार्वजनिक जीवन में अभिजात पुरुषों का प्रभुत्व था और परिवार के मामलों में भी वे निर्णय लेते थे।
- लड़कों को ही शिक्षा दी जाती थी ताकि वे खानदानी पेशा संभाल सकें। विवाह में प्राप्त **दहेज** को पुरुष अपने कारोबार में लगाते थे, पर महिलाओं को कारोबार पर राय देने का अधिकार नहीं था। दहेज न जुट पाए तो लड़कियों को ईसाई मठों में **भिक्षुणी (Nun)** का जीवन बिताने भेज दिया जाता।
- **व्यापारी परिवारों** में स्थिति कुछ भिन्न थी – दुकानदारों की स्त्रियाँ दुकान चलाने में सहायता करती थीं; पति के दूर व्यापार पर जाने पर पत्नियाँ कारोबार संभालती थीं; और व्यापारी की कम उम्र में मृत्यु पर पत्नी को **सार्वजनिक जीवन में बड़ी भूमिका** निभानी पड़ती थी।
- **कसान्द्रा फ़ेदेले** (1465–1558), वेनिस की विदुषी – यूनानी और लातिनी की विद्वान, पादुआ विश्वविद्यालय में भाषण के लिए आमंत्रित। उन्होंने लिखा कि हर महिला को **सभी प्रकार की शिक्षा** प्राप्त करने की इच्छा रखनी चाहिए। उन्होंने गणतंत्र की भी आलोचना की, क्योंकि स्वतंत्रता की सीमित परिभाषा **पुरुषों की इच्छा** का अधिक समर्थन करती थी।
- **इसाबेला दि इस्ते** (1474–1539), **मंटुआ** की मार्चिसा – पति की अनुपस्थिति में अपने राज्य पर शासन किया; उनका दरबार बौद्धिक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध था। इन महिलाओं की रचनाओं से पता चलता है कि उन्हें **अधिक आर्थिक स्वायत्तता, संपत्ति और शिक्षा** मिलनी चाहिए।

दो दृष्टिकोण – क्रियाकलाप 3

कसान्द्रा फ़ेदेले (महिला)	बाल्थासार कास्टिल्योनी, 'द कोर्टियर' (1528) (पुरुष)
स्त्री को हर प्रकार की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए	स्त्री में कोमलता, सहृदयता व 'स्त्रियोचित माधुर्य' हो; उसके तौर-तरीक़े **पुरुषों से भिन्न** हों
शिक्षा से स्वतंत्र पहचान व आत्मनिर्भरता	स्त्री को ऐसे गुण हों जो उसे 'स्त्री' के रूप में ही दिखाएँ – पुरुष-सदृश नहीं

12 ईसाई धर्म के अंतर्गत वाद-विवाद

- नई संस्कृति की शिक्षित व समृद्ध लोगों ने प्रशंसा ही नहीं की, उसे अपनाया भी। पर ये विचार कुछ ही आम आदमी तक पहुँच सके क्योंकि वे **साक्षर नहीं** थे।
- उत्तरी यूरोप में मानवतावाद ने **ईसाई चर्च के अनेक सदस्यों** को आकर्षित किया। उन्होंने ईसाइयों को अपने पुराने धर्मग्रंथों में बताए तरीक़ों से धर्म-पालन और **अनावश्यक कर्मकांड छोड़ने** का आह्वान किया।
- इंग्लैंड के **थॉमस मोर** (1478–1535) और हालैंड के **इरेस्मस** (1466–1536) का मानना था कि चर्च **लालची** संस्था बन गई है। पादरियों द्वारा धन ठगने का सबसे सरल तरीक़ा था **'पाप-स्वीकारोक्ति' (indulgences)** – जो पापों से छुटकारा दिला सकता था।
- यूरोप में किसानों ने चर्च द्वारा लगाए **अनेक करों का विरोध** किया। राजा भी राज-काज में चर्च की दख़लअंदाज़ी से चिढ़े हुए थे। मानवतावादियों ने **'कॉन्स्टैनटाइन का अनुदान'** नामक दस्तावेज़ को **जालसाज़ी से तैयार** सिद्ध किया, तो राजा ख़ुश हुए।



चित्र 7 – धर्म-सुधार : एक नज़र में

- **1517** में जर्मन युवा भिक्षु **मार्टिन लूथर** (1483–1546) ने कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान छेड़ा – तर्क : ईश्वर से संपर्क के लिए **पादरी की आवश्यकता नहीं**; केवल **ईश्वर में पूर्ण विश्वास** ही स्वर्ग दिला सकता है। यह आंदोलन **प्रोटैस्टैंट सुधारवाद** कहलाया।
- जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड के चर्च ने पोप से संबंध समाप्त कर लिए। स्विट्ज़रलैंड में लूथर के विचारों को **उलरिक ज़्विंगली** (1484–1531) और **जौं कैल्विन** (1509–64) ने लोकप्रिय बनाया। व्यापारियों के समर्थन से शहरों में सुधारकों की लोकप्रियता अधिक थी; ग्रामीण इलाकों में कैथलिक चर्च का प्रभाव बना रहा।
- **एनाबेपटिस्ट** जैसे उग्र-सुधारकों ने **मोक्ष को सामाजिक उत्पीड़न के अंत** से जोड़ा। उनका कहना था कि ईश्वर ने सबको एक जैसा बनाया है, इसलिए **कर देने की अपेक्षा न** हो और लोगों को अपना **पादरी चुनने का अधिकार** हो – इसने सामंतवाद से उत्पीड़ित किसानों को आकर्षित किया।
- लूथर ने **आमूल परिवर्तनवाद** का समर्थन नहीं किया; उन्होंने जर्मन शासकों से **किसान विद्रोह के दमन** का आह्वान किया (1525)। फ्रांस में प्रोटैस्टैंटों ने दावा किया कि जनता को अत्याचारी शासक को **अपदस्थ करने का अधिकार** है।
- **इंग्लैंड** के शासकों ने पोप से संबंध तोड़ दिए – राजा/रानी इंग्लैंड के चर्च के प्रमुख बने (1559)।
- **कैथलिक चर्च में भी आंतरिक सुधार** हुए – स्पेन और इटली में पादरियों ने सादा जीवन और निर्धनों की सेवा पर ज़ोर दिया। **इग्नेशियस लोयोला** ने 1540 में **'सोसाइटी ऑफ जीसस'** की स्थापना की – अनुयायी **जेसुइट** कहलाए।

स्रोत – विलियम टिंडेल (अंग्रेज़ी में बाईबल के अनुवादक)

*'...सामान्य लोगों को किसी भी सच्चाई की तब तक जानकारी नहीं हो सकती जब तक उनके पास **अपने धर्मग्रंथ का मातृभाषा में अनुवाद** उपलब्ध न हो। इन अनुवादों से ही वे धर्मग्रंथ की परिपाटी, क्रम और अर्थ समझ सकेंगे।' – टिंडेल के अनुसार पुरोहित वर्ग नहीं चाहता था कि धर्मग्रंथ का अनुवाद मातृभाषा में हो, ताकि दुनिया अंधकार में ही रहे और उसकी ऊँची आकांक्षाएँ व लोलुपता पूरी होती रहे।*

13 कोपरनिकसीय क्रांति

- ईसाइयों की धारणा थी कि **मनुष्य पापी** है, पृथ्वी पापों से भरी है और इसीलिए वह **स्थिर** है – ब्रह्मांड के बीच, जिसके चारों ओर खगोलीय ग्रह घूमते हैं।
- **कोपरनिकस** (1473–1543) – लूथर के समकालीन – ने घोषणा की कि **पृथ्वी समेत सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा** करते हैं।
- कोपरनिकस निष्ठावान ईसाई थे और चर्च की प्रतिक्रिया से **भयभीत** थे। अपनी पाण्डुलिपि **'दि रिवल्यूशनिबस'** (परिभ्रमण) प्रकाशित नहीं करना चाहते थे; **मृत्यु-शैया** पर उन्होंने इसे अपने अनुयायी **जोशिम रिटिकस** को सौंपा।
- आधी शताब्दी से अधिक समय बाद **केप्लर** (1571–1630) और **गैलीलियो** (1564–1642) ने 'स्वर्ग' और 'पृथ्वी' के अंतर को समाप्त कर दिया। केप्लर ने **'कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री'** में सूर्य-केंद्रित सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया और सिद्ध किया कि ग्रह वृत्त नहीं, **दीर्घ वृत्ताकार (ellipse)** मार्ग पर घूमते हैं। गैलीलियो ने **'दि मोशन'** में गतिशील विश्व के सिद्धांतों की पुष्टि की।
- इस क्रांति की पराकाष्ठा **न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत** ('प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका', 1687) में हुई।



चित्र 8 – ब्रह्मांड की धारणा कैसे बदली

14 ब्रह्मांड का अध्ययन – वैज्ञानिक क्रांति

- गैलीलियो ने टिप्पणी की कि **बाईबल स्वर्ग का मार्ग** आलोकित करती है, पर स्वर्ग **कैसे चलता है** – इसके बारे में कुछ नहीं बताती।
- इन विचारकों ने बताया कि **ज्ञान विश्वास से हटकर अवलोकन एवं प्रयोगों पर आधारित** है। भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में अनेक प्रयोग हुए; इतिहासकारों ने इसे **वैज्ञानिक क्रांति** कहा।
- संदेहवादियों और नास्तिकों के मन में सृष्टि की रचना के स्रोत के रूप में **प्रकृति ईश्वर का स्थान** लेने लगी; ईश्वर में विश्वास रखने वाले भी **'दूरस्थ ईश्वर'** की बात करने लगे जो भौतिक संसार को प्रत्यक्ष नियंत्रित नहीं करता।
- वैज्ञानिक संस्थाओं – **पेरिस अकादमी ऑफ़ साइंसेज़** और लंदन की **रॉयल सोसायटी (1662)** – ने **व्याख्यान** और **सार्वजनिक प्रयोग-प्रदर्शन** आयोजित किए; इससे सार्वजनिक क्षेत्र में **नई वैज्ञानिक संस्कृति** की स्थापना हुई।

15 क्या 14वीं सदी में यूरोप में 'पुनर्जागरण' हुआ था ?

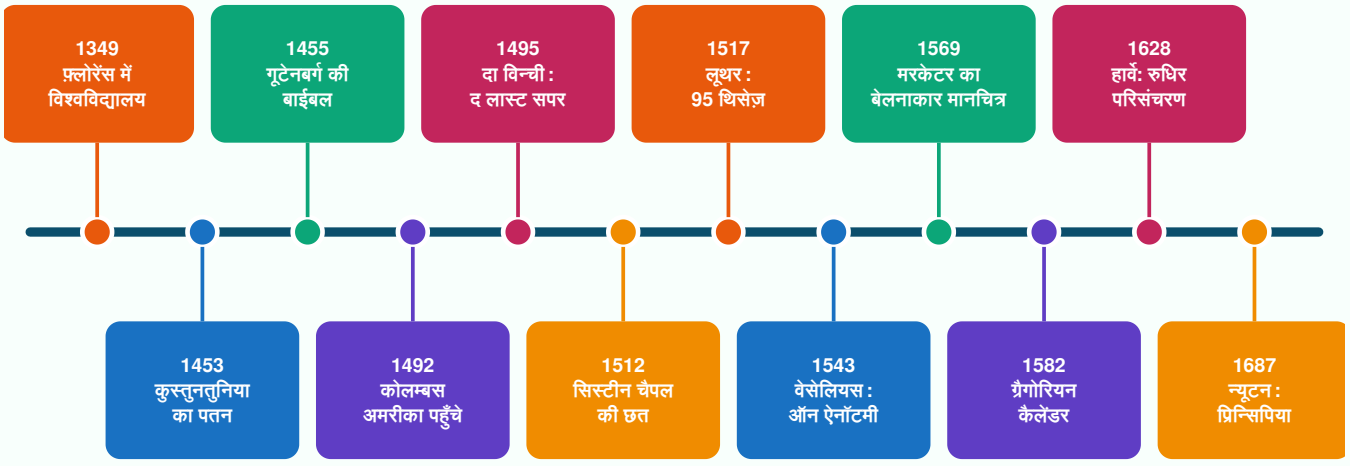
- **पीटर बर्क** जैसे हाल के लेखकों के अनुसार बर्कहार्ट के विचार **अतिशयोक्तिपूर्ण** थे – उन्होंने इस काल और पहले के कालों के **फ़र्क़ को बढ़ा-चढ़ाकर** पेश किया।
- 'पुनर्जागरण' शब्द में यह निहित है कि यूनानी-रोमन सभ्यता का 14वीं में पुनर्जन्म हुआ और **ईसाई विश्वदृष्टि की जगह पूर्व-ईसाई विश्वदृष्टि** फैली। **दोनों तर्क अतिशयोक्तिपूर्ण** थे – पिछली शताब्दियों के विद्वान भी यूनानी-रोमन संस्कृति से परिचित थे और लोगों के जीवन में **धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान** था।
- पुनर्जागरण को 'गतिशील' और मध्यकाल को 'अंधकारमय' कहना **ज़रूरत से ज़्यादा सरलीकरण** है। इटली में पुनर्जागरण से जुड़े अनेक तत्त्व **12वीं–13वीं शताब्दी** में मिलते हैं; कुछ इतिहासकार तो 9वीं शताब्दी में फ्रांस में भी ऐसी रचनाओं का उल्लेख करते हैं।
- इस बदलाव में केवल रोम-यूनान का हाथ नहीं था। **एशिया में प्रौद्योगिकी और कार्य-कुशलता** यूनानियों-रोमनों से काफ़ी विकसित थी। **नौसंचालन की नई तकनीकों**, इस्लाम के विस्तार और मंगोलों की विजयों ने एशिया, उत्तरी अफ्रीका और यूरोप को जोड़ा। यूरोपियों ने **भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया और चीन** से भी ज्ञान पाया – पर लंबे समय तक इन ऋणों को **यूरोप-केंद्रित दृष्टिकोण** के कारण स्वीकार नहीं किया गया।
- इस काल में **'निजी'** और **'सार्वजनिक'** क्षेत्र अलग-अलग बनने लगे। व्यक्ति केवल तीन वर्गों (three orders) में से एक का सदस्य नहीं, बल्कि **स्वतंत्र व्यक्ति** था; 18वीं सदी में इसे राजनीतिक रूप से **एकसमान राजनीतिक अधिकारों** के विश्वास में व्यक्त किया गया।
- **भाषा के आधार पर** यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों ने अपनी पहचान बनानी शुरू की – रोमन साम्राज्य और लातिनी भाषा/ईसाई धर्म से जुड़ा यूरोप अब **अलग-अलग राज्यों** में बँटने लगा; इन राज्यों का आंतरिक जुड़ाव **समान भाषा** के कारण था।



चित्र 9 – सार्वजनिक व निजी क्षेत्र और व्यक्ति की नई पहचान

B एक नज़र में – Quick Revision

16 समय-रेखा (चुनिंदा प्रमुख घटनाएँ)



चित्र 10 – 14वीं से 17वीं शताब्दी : मुख्य मील के पत्थर

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियाँ	
1300	इटली के पादुआ विश्वविद्यालय में मानवतावाद पढ़ाया जाने लगा
1341	पेट्रार्क को रोम में 'राजकवि' की उपाधि से सम्मानित किया गया
1349	फ़्लोरेंस में विश्वविद्यालय की स्थापना
1390	जेफ़्री चॉसर की 'कैंटरबरी टेल्स' का प्रकाशन
1436	ब्रूनेलेशी ने फ़्लोरेंस में डयूमा का परिरूप तैयार किया
1453	कुस्तुनतुनिया के बाइज़ेंटाइन शासक को ऑटोमन तुर्कों ने पराजित किया
1454	गुटेनबर्ग ने विभाज्य टाइप (Movable type) से बाईबल का प्रकाशन किया
1484	पुर्तगाली गणितज्ञों ने सूर्य का अध्ययन कर अक्षांश की गणना की
1492	कोलम्बस अमरीका पहुँचे
1495	लियोनार्दो द विंची ने 'द लास्ट सपर' (अंतिमभोज) चित्र बनाया
1512	माइकल एन्जिलो ने सिस्टीन चैपल की छत पर चित्र बनाए

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियाँ	
1516	टॉमस मोर की 'यूटोपिया' (Utopia) का प्रकाशन
1517	मार्टिन लूथर द्वारा 'नाइन्टी फाइव थिसेज़' की रचना
1522	लूथर द्वारा बाईबल का जर्मन में अनुवाद
1525	जर्मनी में किसान विद्रोह
1543	एन्ड्रीयास वेसेलियस द्वारा 'ऑन ऐनॉटमी' ग्रंथ की रचना
1559	इंग्लैंड में ऑंग्ल-चर्च की स्थापना – राजा/रानी प्रमुख
1569	गेरहार्डस मरकेटर ने पृथ्वी का पहला बेलनाकार मानचित्र बनाया
1582	पोप ग्रैगरी XIII द्वारा ग्रैगोरियन कैलेंडर का प्रचलन
1628	विलियम हार्वे ने हृदय को रुधिर-परिसंचरण से जोड़ा
1673	पेरिस में 'अकादमी ऑफ़ साइंसेज़' की स्थापना
1687	आइजक न्यूटन के 'प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका' का प्रकाशन

17 प्रमुख व्यक्तित्व – एक तालिका में

व्यक्ति	काल	योगदान / पहचान
पेट्रार्क	1304–78	प्राचीन यूनानी-रोमन लेखकों के अध्ययन पर बल; मानवतावाद के प्रतिनिधि
दाँते अलिगहियरी	1265–1321	फ़्लोरेंस के; धार्मिक विषयों पर कलम चलाई
जोटो	1267–1337	फ़्लोरेंस के कलाकार; जीवंत रूपचित्र (Portrait)
पिको देल्ला मिरांदोला	1463–94	'ऑन दि डिग्निटी ऑफ़ मैन' (1486); वाद-विवाद पर बल
दोनातल्लो	1386–1466	1416 में सजीव मूर्तियाँ
अल्ब्रेख्ट डयूरर	1471–1528	'प्रार्थनारत हस्त' रेखाचित्र (1508)
लियोनार्दो दा विन्ची	1452–1519	मोना लीसा, द लास्ट सपर; उड़न-मशीन का डिज़ाइन
माइकल एंजेलो	1475–1564	सिस्टीन चैपल की छत; 'दि पाइटा'; सेंट पीटर का गुम्बद
ब्रूनेलेशी	—	फ़्लोरेंस के डूओमो (गुम्बद) का परिरूप
लिओन बतिस्ता अल्बर्टी	1402–72	कला-सिद्धांत व वास्तुकला पर लेखन
एन्ड्रीयास वेसेलियस	1514–64	पादुआ में शरीर की चीर-फाड़; 'ऑन ऐनॉटमी' (1543)
जोहानेस गूटेनबर्ग	1400–58	छापाखाना; बाईबल की 150 प्रतियाँ (1455)
निकोलो मैक्यावेली	—	'द प्रिंस' (1513); 'सभी मनुष्य बुरे हैं', स्वार्थ पर ज़ोर
कसान्द्रा फ़ेदेले	1465–1558	वेनिस की विदुषी; पादुआ वि.वि. में भाषण हेतु आमंत्रित
इसाबेला दि इस्ते	1474–1539	मंटुआ की मार्चिसा; पति की अनुपस्थिति में शासन
थॉमस मोर / इरेस्मस	1478–1535 / 1466–1536	चर्च की लालच/पाप-स्वीकारोक्ति की आलोचना; 'यूटोपिया' (1516)
मार्टिन लूथर	1483–1546	1517 में कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान; प्रोटैस्टैंट सुधारवाद
ज्विंगली / कैल्विन	1484–1531 / 1509–64	स्विट्ज़रलैंड में सुधार के विचार फैलाए
इग्नेशियस लोयोला	—	1540 में 'सोसाइटी ऑफ जीसस' (जेसुइट)
कोपरनिकस	1473–1543	सूर्य-केंद्रित सिद्धांत; 'दि रिवल्यूशनिबस'
केप्लर	1571–1630	ग्रहों के दीर्घ वृत्ताकार मार्ग; 'कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री'
गैलीलियो	1564–1642	'दि मोशन'; अवलोकन व प्रयोगों पर आधारित ज्ञान
आइज़क न्यूटन	—	गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत; 'प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका' (1687)

18 तुलना तालिका

आधार	मध्यकालीन सोच (चर्च-नियंत्रित)	मानवतावादी / नई सोच
मनुष्य	तीन वर्गों (पादरी, सामंत, किसान) का सदस्य	स्वतंत्र, बहुमुखी, विवेकशील व्यक्ति
ज्ञान का स्रोत	चर्च व धर्मग्रंथ	अवलोकन, प्रयोग, तर्क, प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन
जीवन का लक्ष्य	परलोक पर ध्यान	इसी विश्व में सुख व उपलब्धि की खोज
ब्रह्मांड	पृथ्वी स्थिर व केंद्र में	सूर्य-केंद्रित; ग्रह दीर्घ वृत्ताकार मार्ग पर
पुस्तकें	हस्तलिखित, बहुत कम प्रतियाँ	मुद्रित, सुलभ; पढ़ने की आदत
कला	धार्मिक, पारंपरिक	यथार्थवाद – परिदृश्य, त्रि-आयामी, तैल-चित्र

आधार	प्रोटैस्टैंट सुधार	कैथलिक चर्च के आंतरिक सुधार
नेता	लूथर, ज्विंगली, कैल्विन	इग्नेशियस लोयोला (जेसुइट)
मुख्य बात	पादरी की ज़रूरत नहीं; ईश्वर में पूर्ण विश्वास	पादरियों का सादा जीवन; निर्धनों की सेवा
समर्थन	शहरी व्यापारी; उत्पीड़ित किसान (उग्र सुधारक)	स्पेन व इटली के पादरी
परिणाम	जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, इंग्लैंड के चर्च का पोप से नाता टूटा	चर्च के भीतर नैतिक सुधार; दूसरी संस्कृतियों का ज्ञान बढ़ाने पर बल

याद रखें – 5 महत्त्वपूर्ण बिंदु

- पुनर्जागरण की शुरुआत **इटली के नगरों** (फ़्लोरेंस, वेनिस, पादुआ...) से हुई।
- बर्कहार्ट की पुस्तक **1860** में आई; पीटर बर्क ने उनके विचारों को अतिशयोक्तिपूर्ण बताया।
- मुद्रण (गूटेनबर्ग, **1455**) ने विचारों को आल्प्स पार पहुँचाया।
- लूथर का आंदोलन **1517** में – प्रोटैस्टैंट सुधारवाद।
- कोपरनिकस → केप्लर → गैलीलियो → **न्यूटन (1687)** : वैज्ञानिक क्रांति का क्रम।



चित्र 11 – अध्याय का माइंड-मैप

C 20 बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) + उत्तर कुंजी

1 'रेनेसाँ' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

(a) पुनर्जन्म
(b) क्रांति
(c) सुधार
(d) खोज

2 1860 में बर्कहार्ट ने कौन-सी पुस्तक लिखी ?

(a) द प्रिंस
(b) द सिविलाइजेशन ऑफ़ द रेनेसाँ इन इटली
(c) यूटोपिया
(d) द कोर्टियर

3 यूरोप के सबसे पहले विश्वविद्यालय किस देश में स्थापित हुए ?

(a) फ्रांस
(b) जर्मनी
(c) इटली
(d) इंग्लैंड

4 11वीं शताब्दी से कानून के अध्ययन के केंद्र कौन-से नगर रहे ?

(a) फ़्लोरेंस और रोम
(b) वेनिस और जेनेवा
(c) मंटुआ और रोम
(d) पादुआ और बोलोनिया

5 15वीं सदी के आरंभ में 'मानवतावादी' किन्हें कहा जाता था ?

(a) व्यापारियों को
(b) व्याकरण, कविता, इतिहास, नीतिदर्शन पढ़ाने वाले अध्यापकों को
(c) पादरियों को
(d) वास्तुविदों को

6 'ऑन दि डिग्निटी ऑफ़ मैन' (1486) के लेखक कौन थे ?

(a) पिको देल्ला मिरांदोला
(b) पेट्रार्क
(c) दाँते
(d) अल्बर्टी

7 'परीक्षण का अनुयायी' नाम किस कलाकार ने अपनाया ?

(a) माइकल एंजेलो
(b) जोटो
(c) लियोनार्दो दा विन्ची
(d) ड्यूरर

8 सिस्टीन चैपल की छत का लेपचित्र किसने बनाया ?

(a) दोनातल्लो
(b) माइकल एंजेलो
(c) ब्रूनेलेशी
(d) वेसेलियस

9 फ़्लोरेंस के भव्य गुम्बद (डूओमो) का परिरूप किसने बनाया ?

(a) अल्बर्टी
(b) जोटो
(c) दोनातल्लो
(d) फिलिप्पो ब्रूनेलेशी

10 पादुआ विश्वविद्यालय में मानव शरीर की चीर-फाड़ किसने की ?

(a) वेसेलियस
(b) हार्वे
(c) गैलीलियो
(d) इब्न सिना

11 गूटेनबर्ग ने 1455 में किस ग्रंथ की प्रतियाँ छापीं?

(a) यूटोपिया
(b) द प्रिंस
(c) बाईबल
(d) ऑन ऐनॉटमी

12 'द प्रिंस' (1513) के लेखक कौन हैं?

(a) थॉमस मोर
(b) निकोलो मैक्यावेली
(c) इरेस्मस
(d) कास्टिल्योनी

13 **कसान्द्रा फ़ेदेले कौन थीं?**

(a) मंटुआ की शासिका
(b) प्रसिद्ध चित्रकार
(c) वेनिस की विदुषी, जिन्हें पादुआ वि.वि. में भाषण हेतु बुलाया गया
(d) कैथलिक सुधारक

14 **इसाबेला दि इस्ते कौन थीं?**

(a) वेनिस की लेखिका
(b) फ़्लोरेंस की चित्रकार
(c) जेनेवा की व्यापारी
(d) मंटुआ की मार्चिसा

15 **1517 में कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान किसने छेड़ा ?**

(a) मार्टिन लूथर
(b) जौं कैल्विन
(c) ज्विंगली
(d) थॉमस मोर

16 **1540 में 'सोसाइटी ऑफ जीसस' की स्थापना किसने की ?**

(a) जौं कैल्विन
(b) ज्विंगली
(c) इग्नेशियस लोयोला
(d) थॉमस मोर

17 **कोपरनिकस ने सूर्य-केंद्रित सिद्धांत किस पांडुलिपि में दिया ?**

(a) कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री
(b) दि रिवल्यूशनिबस
(c) दि मोशन
(d) प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका

18 **केप्लर ने सिद्ध किया कि ग्रह किस मार्ग पर परिक्रमा करते हैं?**

(a) वृत्ताकार
(b) सीधी रेखा
(c) वर्गाकार
(d) दीर्घ वृत्ताकार

19 **स्पेन के अरबी दार्शनिक, जिन्होंने दर्शन व धार्मिक विश्वासों के तनाव सुलझाने की कोशिश की ?**

(a) इब्न सिना
(b) अल-राज़ी
(c) इब्न रूश्द (अविरोज़)
(d) टॉलेमी

20 **मानवतावादियों के कालक्रम में 'अंधकार युग' कौन-सा काल है ?**

(a) 5वीं–9वीं शताब्दी
(b) 9वीं–11वीं शताब्दी
(c) 11वीं–14वीं शताब्दी
(d) 15वीं शताब्दी से

उत्तर कुंजी

1. (a)	2. (b)	3. (c)	4. (d)	5. (b)
6. (a)	7. (c)	8. (b)	9. (d)	10. (a)
11. (c)	12. (b)	13. (c)	14. (d)	15. (a)
16. (c)	17. (b)	18. (d)	19. (c)	20. (a)

D 1 अंक के प्रश्न-उत्तर

1 'रेनेसाँ' का हिंदी अर्थ क्या है ?

उत्तर : **पुनर्जागरण** (शाब्दिक अर्थ – पुनर्जन्म)।

2 जैकब बर्कहार्ट किस विश्वविद्यालय के इतिहासकार थे ?

उत्तर : स्विट्ज़रलैंड के **बेसले विश्वविद्यालय** के।

3 बर्कहार्ट किस इतिहासकार के विद्यार्थी थे ?

उत्तर : जर्मन इतिहासकार **लियोपोल्ड वॉन रांके** के।

4 किन दो इटली के नगरों को सर्वाधिक जीवंत माना गया ?

उत्तर : **वेनिस और जेनेवा**।

5 12वीं शताब्दी से चीन के साथ 'रेशम मार्ग' से व्यापार किसने शुरू किया ?

उत्तर : **मंगोलों** ने।

6 यूरोप के पहले विश्वविद्यालय किन शहरों में बने ?

उत्तर : **इटली** के शहरों में (पादुआ, बोलोनिया आदि)।

7 पेट्रार्क किसके प्रतिनिधि थे ?

उत्तर : कानून के अध्ययन में आए उस परिवर्तन के – जिसमें रोमन संस्कृति के संदर्भ में अध्ययन होने लगा; अर्थात् **मानवतावाद** के।

8 दाँते अलिगहियरी कहाँ के थे ?

उत्तर : **फ़्लोरेंस** के।

9 जोटो ने किस प्रकार के चित्र बनाए ?

उत्तर : **जीते-जागते रूपचित्र (Portrait)**।

10 गूटेनबर्ग किस देश के मूल निवासी थे ?

उत्तर : **जर्मनी** के।

11 'ऑन प्लेज़र' पुस्तक किसकी है ?

उत्तर : **लोरेन्ज़ो वल्ला** की।

12 मार्टिन लूथर के आंदोलन को क्या नाम दिया गया ?

उत्तर : **प्रोटैस्टैंट सुधारवाद**।

13 स्विट्ज़रलैंड में लूथर के विचारों को किसने लोकप्रिय बनाया ?

उत्तर : **उलरिक ज्विंगली** और **जौं कैल्विन** ने।

14 ग्रहों के दीर्घ वृत्ताकार मार्ग को किसने सिद्ध किया ?

उत्तर : **जोहानेस केप्लर** ने।

15 1662 में लंदन में कौन-सी वैज्ञानिक संस्था बनी ?

उत्तर : **रॉयल सोसायटी**।

E 2 अंक के प्रश्न-उत्तर

1 इटली में 'नगर-राज्य' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : इटली के नगर स्वयं को किसी साम्राज्य का अंग नहीं, बल्कि **स्वतंत्र शासन वाली इकाइयाँ** मानते थे। **फ़्लोरेंस व वेनिस** गणराज्य थे; कुछ **दरबारी नगर** थे जिन पर राजकुमार शासन करते थे।

2 'मानवतावाद' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : वह संस्कृति जो **व्यक्ति की गरिमा, उसके स्वतंत्र निर्णय व बहुमुखी स्वभाव** में विश्वास करती थी; व्याकरण, कविता, इतिहास, नीतिदर्शन के अध्ययन तथा **चर्चा और वाद-विवाद** पर बल देती थी।

3 'रेनेसाँ व्यक्ति' का क्या अर्थ है ?

उत्तर : जिस व्यक्ति की **अनेक रुचियाँ** हों और अनेक हुनर में महारत हो – जैसे एक ही व्यक्ति विद्वान, कूटनीतिज्ञ, धर्मशास्त्रज्ञ और कलाकार हो। उदाहरण – **लियोनार्दो दा विन्ची**।

4 कला में 'यथार्थवाद' क्या है ?

उत्तर : शरीर विज्ञान, रेखागणित, भौतिकी और सौंदर्य-बोध की मदद से मनुष्य व प्रकृति को **जैसा है वैसा सजीव, त्रि-आयामी** चित्रित करने की इतालवी कला की परंपरा।

5 'ह्यूमेनिटीज़' शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई ?

उत्तर : लातिनी शब्द **'ह्यूमेनिटास'** से, जिसका प्रयोग रोम के वकील व निबंधकार **सिसरो** (106–43 ई.पू.) ने 'संस्कृति' के अर्थ में किया था।

6 'पाप-स्वीकारोक्ति' (indulgences) क्या थी ?

उत्तर : पादरियों द्वारा दिया जाने वाला वह प्रमाण-पत्र जो **व्यक्ति को उसके पापों से छुटकारा दिला सकता** था – यह लोगों से धन ठगने का सबसे सरल तरीक़ा बन गया था।

7 जेसुइट कौन थे ?

उत्तर : **इग्नेशियस लोयोला** द्वारा 1540 में स्थापित 'सोसाइटी ऑफ जीसस' के अनुयायी, जिनका ध्येय **निर्धनों की सेवा** और दूसरी संस्कृतियों के बारे में अपना ज्ञान व्यापक बनाना था।

8 'कॉन्स्टैनटाइन का अनुदान' क्या था ?

उत्तर : एक दस्तावेज़, जिससे पादरी न्यायिक व वित्तीय शक्तियों पर अपना दावा जताते थे; माना जाता था कि यह प्रथम ईसाई सम्राट कॉन्स्टैनटाइन ने जारी किया – मानवतावादियों ने इसे **बाद की जालसाज़ी** सिद्ध किया।

F 4 अंक के प्रश्न-उत्तर + केस आधारित प्रश्न

1 इतिहास-लेखन के बारे में बर्कहार्ट और रांके के दृष्टिकोण में क्या अंतर था ?

उत्तर : **रांके** मानते थे कि इतिहासकार का पहला उद्देश्य **राज्यों और राजनीति** के बारे में लिखना है, जिसके लिए सरकारी विभागों के कागज़ात और फ़ाइलों का उपयोग हो। **बर्कहार्ट** अपने गुरु के सीमित लक्ष्यों से असंतुष्ट थे – उनके अनुसार इतिहास का सरोकार **संस्कृति से भी उतना ही** है जितना राजनीति से। इसी सोच से उन्होंने 1860 में 'द सिविलाइजेशन ऑफ़ द रेनेसाँ इन इटली' लिखी, जिसमें साहित्य, वास्तुकला और चित्रकला का वर्णन है।

2 मुद्रण के आविष्कार का मानवतावादी विचारों के प्रसार पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : (i) गूटेनबर्ग (1455) की कार्यशाला में बाईबल की **150 प्रतियाँ** छपीं, जबकि एक भिक्षु एक ही प्रति लिख पाता था। (ii) छात्र केवल **व्याख्यानों के नोट्स पर निर्भर** नहीं रहे। (iii) पाठक **एकांत में पढ़ सकता** था – पढ़ने की आदत बढ़ी। (iv) विचार, मत और जानकारी **तेज़ी से फैले**; इटली की मानवतावादी संस्कृति **आल्प्स पार** पहुँची।

3 पुनर्जागरण काल में महिलाओं की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर : सार्वजनिक जीवन में अभिजात पुरुषों का प्रभुत्व था; **लड़कों को ही शिक्षा** दी जाती थी। महिलाओं को दहेज के उपयोग या कारोबार पर राय देने का अधिकार नहीं था; दहेज न होने पर उन्हें **मठों में भिक्षुणी** बना दिया जाता था। **व्यापारी परिवारों** की महिलाएँ दुकानें/कारोबार संभालती थीं। **कसान्द्रा फ़ेदेले** (शिक्षा की हिमायती) और **इसाबेला दि इस्ते** (मंटुआ की शासिका) जैसी महिलाओं ने अधिक **आर्थिक स्वायत्तता, संपत्ति और शिक्षा** की माँग की।

4 यूरोपीय पुनर्जागरण में अरब विद्वानों का योगदान बताइए।

उत्तर : अरबी विद्वानों ने **प्लेटो, अरस्तू** आदि की यूनानी पांडुलिपियों का संरक्षण व अनुवाद सावधानी से किया; यूरोपीय विद्वान 14वीं सदी में इन अनुवादों से पढ़ने लगे। **इब्न सिना** (आयुर्विज्ञान व दर्शन), **अल-राज़ी** (आयुर्विज्ञान विश्वकोश) और **इब्न रूश्द** (दर्शन व धर्म में तालमेल) की कृतियाँ यूरोप पहुँचीं। प्राकृतिक विज्ञान, गणित, खगोल, औषधि और रसायन के ग्रंथों का प्रसार हुआ; 'अलमजेस्ट' में 'अल' उपसर्ग इस संबंध का प्रमाण है।

5 क्या यह कहना ठीक है कि मध्यकाल 'अंधकार युग' था और पुनर्जागरण से सब कुछ नया शुरू हुआ ? समझाइए।

उत्तर : नहीं – यह **सरलीकरण** है। पुनर्जागरण से जुड़े अनेक तत्त्व **12वीं–13वीं शताब्दी** में मिलते हैं; पिछली शताब्दियों के विद्वान भी यूनानी-रोमन संस्कृति से परिचित थे और जीवन में धर्म का महत्त्व बना रहा। यूरोपियों ने **भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया व चीन** से भी ज्ञान लिया; नौसंचालन की नई तकनीकों व मंगोल विजयों ने एशिया-यूरोप को जोड़ा। अतः बदलाव में केवल यूनान-रोम का हाथ नहीं था।

★ केस आधारित प्रश्न – 1

अनुच्छेद – वेनिस की शासन-व्यवस्था (कोन्तारिनी)

'...वेनिस के संयुक्तमंडल की संस्था के बारे में जानने पर आपको ज्ञात होगा कि नगर का संपूर्ण प्राधिकार एक ऐसी परिषद् के हाथों में है जिसमें 25 वर्ष से अधिक आयु वाले [संभ्रांत वर्ग के] सभी पुरुषों को सदस्यता मिल जाती है... सामान्य जनता को नागरिक वर्ग में शामिल क्यों नहीं किया गया? क्योंकि उन नगरों में अनेक प्रकार की गड़बड़ियाँ और जन-उपद्रव होते रहते हैं जहाँ की सरकार पर जन-सामान्य का प्रभाव रहता है...'

- (i) यह अंश किस नगर-राज्य की शासन-व्यवस्था के बारे में है ? **(1)** → **वेनिस**।
- (ii) परिषद की सदस्यता किसे मिलती थी ? **(1)** → **25 वर्ष से अधिक आयु के संभ्रांत वर्ग के पुरुषों** को।
- (iii) सामान्य जनता को नागरिक वर्ग से बाहर क्यों रखा गया ? **(2)** → लेखक के अनुसार जहाँ सरकार पर जन-सामान्य का प्रभाव होता है वहाँ **गड़बड़ियाँ और जन-उपद्रव** होते रहते हैं।
- (iv) क्या इस व्यवस्था को पूर्णतः लोकतांत्रिक कहा जा सकता है ? **(2)** → नहीं; इसमें केवल **अभिजात पुरुषों** को सदस्यता थी। सामान्य जनता व महिलाएँ बाहर थीं, यद्यपि गरीबों को छोड़कर सभी नागरिकों के प्रतिनिधित्व की बात कही गई।

★ केस आधारित प्रश्न – 2

अनुच्छेद – विलियम टिंडेल

'...सामान्य लोगों को किसी भी सच्चाई की तब तक जानकारी नहीं हो सकती जब तक उनके पास अपने धर्मग्रंथ का मातृभाषा में अनुवाद उपलब्ध न हो। इन अनुवादों से ही वे धर्मग्रंथ की परिपाटी, क्रम और अर्थ समझ सकेंगे।'

- (i) विलियम टिंडेल कौन थे ? **(1)** → लूथरवादी अंग्रेज़, जिन्होंने **बाईबल का अंग्रेज़ी में अनुवाद** किया।
- (ii) टिंडेल के अनुसार मातृभाषा में अनुवाद क्यों ज़रूरी था ? **(2)** → ताकि आम लोग धर्मग्रंथ का **क्रम, अर्थ व परिपाटी स्वयं समझ** सकें और सच्चाई जान सकें।
- (iii) उनके अनुसार पुरोहित वर्ग अनुवाद क्यों नहीं चाहता था ? **(2)** → ताकि लोग **अंधकार में रहें** और पुरोहितों के बनाए अंधविश्वास व झूठे सिद्धांत चलते रहें, जिससे उनकी **ऊँची आकांक्षाएँ और लोलुपता** पूरी होती रहे।

G 6 अंक के प्रश्न-उत्तर (भूमिका – बिंदु – निष्कर्ष)

1 मानवतावादी विचारों का उदय इटली के नगरों में सबसे पहले क्यों हुआ ? इसकी विशेषताएँ बताइए।

भूमिका

पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद इटली अनेक टुकड़ों में बँटा था, पर इन्हीं परिस्थितियों ने वहाँ **मानवतावादी संस्कृति** के उदय में सहायता की।

मुख्य बिंदु

- बाइज़ेंटाइन–इस्लामी व्यापार तथा रेशम मार्ग से **बंदरगाह नगर समृद्ध** हुए।
- वेनिस, जेनेवा जैसे नगरों में **धनी व्यापारी शासन में सक्रिय** थे; धर्माधिकारी व सामंत कमज़ोर थे – **नागरिकता की भावना** पनपी।
- नगर राजा व चर्च से कुछ स्वायत्त थे; अमीरों ने **कलाकारों-लेखकों को संरक्षण** दिया।
- व्यापार के कारण **वकीलों/नोटरी** की माँग बढ़ी; पादुआ व बोलोनिया में कानून का अध्ययन रोमन संस्कृति के संदर्भ में हुआ – पेट्रार्क ने प्राचीन लेखकों के अध्ययन पर बल दिया।
- विशेषताएँ : **व्यक्ति की गरिमा, वाद-विवाद, बहुमुखी स्वभाव, धर्म के नियंत्रण में कमी, इसी जीवन में सुख की खोज**।

निष्कर्ष

इस प्रकार आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक स्वायत्तता और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन के मेल से इटली में मानवतावाद का जन्म हुआ।

2 पुनर्जागरण काल में कला और वास्तुकला में आए परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए।

भूमिका

पुनर्जागरण में कला व वास्तुकला ने **मानवतावादी विचारों** को फैलाने में प्रभावी भूमिका निभाई।

मुख्य बिंदु

- प्राचीन रोम के अवशेषों के अध्ययन से प्रेरणा; दोनातल्लो ने 1416 में **सजीव मूर्तियाँ** बनाईं।
- वेसेलियस की चीर-फाड़ व **शरीर विज्ञान** से मानव आकृति का सटीक चित्रण संभव हुआ।
- चित्रकारों ने **रेखागणित (परिदृश्य)** व **प्रकाश के गुणों** का प्रयोग कर चित्रों को त्रि-आयामी बनाया; **तैल माध्यम** से चित्र चटख हुए – इसे **यथार्थवाद** कहा गया।
- वास्तुकला में रोमन '**शास्त्रीय शैली**' का पुनरुद्धार; ब्रूनेलेशी का फ़्लोरेंस का गुम्बद; माइकल एंजेलो का सेंट पीटर गुम्बद, सिस्टीन चैपल व 'द पाइटा'।
- कलाकार की पहचान **गिल्ड नहीं, अपने नाम** से होने लगी; लियोनार्दो, माइकल एंजेलो जैसे **बहुमुखी कलाकार** हुए।

निष्कर्ष

कला व वास्तुकला में यह परिवर्तन मनुष्य की योग्यता में विश्वास को दर्शाता है, और यथार्थवाद की परंपरा 19वीं सदी तक चली।

3 **वैज्ञानिक क्रांति पर एक लेख लिखिए। इसमें कोपरनिकस, केप्लर और गैलीलियो का योगदान बताइए।**

भूमिका

चर्च मानता था कि पृथ्वी स्थिर है और ब्रह्मांड के केंद्र में है। इस धारणा को वैज्ञानिकों ने चुनौती दी, जिसे **वैज्ञानिक क्रांति** कहा गया।

मुख्य बिंदु

- **कोपरनिकस** (1473–1543) – पृथ्वी समेत सारे ग्रह **सूर्य की परिक्रमा** करते हैं; चर्च के डर से पांडुलिपि 'दि रिवल्यूशनिबस' मृत्यु-शैया पर सौंपी।
- **केप्लर** (1571–1630) – 'कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री'; ग्रहों के मार्ग **दीर्घ वृत्ताकार** हैं।
- **गैलीलियो** (1564–1642) – 'दि मोशन'; 'स्वर्ग' और 'पृथ्वी' के अंतर को समाप्त किया; ज्ञान **अवलोकन व प्रयोग** पर आधारित।
- पराकाष्ठा – **न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत** (1687)।
- संस्थाएँ – पेरिस अकादमी, **रॉयल सोसायटी (1662)**; सार्वजनिक व्याख्यान/प्रदर्शन से **वैज्ञानिक संस्कृति**।

निष्कर्ष

वैज्ञानिक क्रांति ने ज्ञान के आधार को **विश्वास से अवलोकन व तर्क** की ओर मोड़ा और आधुनिक विज्ञान की नींव रखी।

4 **यूरोप में प्रोटैस्टैंट सुधार आंदोलन के कारण और परिणामों की चर्चा कीजिए।**

भूमिका

मानवतावादी विचारों के प्रभाव से **ईसाई चर्च में वाद-विवाद** शुरू हुए, जिसकी परिणति 1517 में मार्टिन लूथर के आंदोलन के रूप में हुई।

मुख्य बिंदु

- **कारण :** चर्च का लालच; **पाप-स्वीकारोक्ति** से धन ठगना; किसानों पर चर्च के कर; राजाओं की चर्च की दख़ल से नाराज़गी; 'कॉन्स्टैनटाइन के अनुदान' का झूठ सिद्ध होना; स्थानीय भाषाओं में बाईबल से लोगों को पता चला कि ये प्रथाएँ धर्म-सम्मत नहीं।
- **आंदोलन :** लूथर – पादरी की ज़रूरत नहीं; ज्विंगली व कैल्विन – स्विट्ज़रलैंड; एनाबेपटिस्ट – सामाजिक उत्पीड़न का अंत।
- **परिणाम :** जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड व इंग्लैंड के चर्च का पोप से संबंध-विच्छेद; फ्रांस में प्रोटैस्टैंटों को उपासना की छूट; **कैथलिक चर्च में आंतरिक सुधार** और जेसुइट संस्था (1540)।

निष्कर्ष

धर्म-सुधार ने चर्च की सत्ता को चुनौती दी और व्यक्ति को धर्म के मामले में निर्णय की अधिक स्वतंत्रता दी।

H पाठ्यपुस्तक 'अभ्यास' – सभी प्रश्न उत्तर सहित

1 संक्षेप में उत्तर दीजिए

1 चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियों में यूनानी और रोमन संस्कृति के किन तत्त्वों को पुनर्जीवित किया गया ?

उत्तर : (i) **प्राचीन यूनानी-रोमन लेखकों के ग्रंथों** (प्लेटो, अरस्तू, सिसरो आदि) का अध्ययन; (ii) **रोमन विधिशास्त्र/कानून** का रोमन संस्कृति के संदर्भ में अध्ययन; (iii) **व्याकरण, अलंकारशास्त्र, कविता, इतिहास व नीतिदर्शन** की शिक्षा – 'ह्यूमेनिटास' की भावना; (iv) रोम के **वास्तुकला के अवशेषों** से 'शास्त्रीय शैली' का पुनरुद्धार; (v) **संतुलित मूर्तियों** की परंपरा (दोनातल्लो)।

2 इस काल की इटली की वास्तुकला और इस्लामी वास्तुकला की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

उत्तर :

आधार	इटली की (पुनर्जागरण) वास्तुकला	इस्लामी वास्तुकला
शैली	रोमन '**शास्त्रीय**' शैली का पुनरुद्धार	अपनी विशिष्ट शैली
प्रमुख तत्त्व	गुम्बद (ब्रूनेलेशी का डूओमो, सेंट पीटर), स्तंभ, संतुलित अनुपात	गुम्बद, मेहराब, मीनार, आँगन
सजावट	भवनों में **लेपचित्र, मूर्तियाँ व उभरे चित्र**	ज्यामितीय/पुष्पीय अलंकरण व सुलेख (प्रायः मानव-चित्रण नहीं)
संरक्षक	पोप, धनी व्यापारी, अभिजात वर्ग	शासक, सुल्तान व धनी वर्ग
समानता	दोनों में **गुम्बद व मेहराब** का प्रयोग; दोनों में भव्यता व संतुलन	

नोट : इस्लामी वास्तुकला का विवरण इस अध्याय में विस्तार से नहीं है – यह अन्य अध्यायों/सामान्य जानकारी पर आधारित तुलना है।

3 मानवतावादी विचारों का अनुभव सबसे पहले इतालवी शहरों में क्यों हुआ ?

उत्तर : (i) बाइज़ेंटाइन–इस्लामी व्यापार व रेशम मार्ग से **बंदरगाह नगर समृद्ध** हुए; (ii) नगर-राज्यों में **धनी व्यापारी व महाजन** शासन में सक्रिय थे; धर्माधिकारी/सामंत शक्तिशाली नहीं थे; (iii) **नागरिकता की भावना** व राजा-चर्च से स्वायत्तता; (iv) **यूरोप के पहले विश्वविद्यालय** यहीं बने – व्यापार के कारण वकीलों व नोटरी की माँग से कानून व रोमन संस्कृति का अध्ययन; (v) **अमीरों का संरक्षण** कलाकारों व विद्वानों को मिला; (vi) प्राचीन रोम के अवशेष इटली में ही थे।

4 वेनिस और समकालीन फ्रांस में 'अच्छी सरकार' के विचारों की तुलना कीजिए।

उत्तर :

वेनिस (कोन्तारिनी)	समकालीन फ्रांस (प्रोटेस्टैंट)
शासन एक **परिषद** के हाथ में; 25 वर्ष से अधिक आयु के संभ्रांत वर्ग के पुरुष सदस्य	अच्छी सरकार वह जो **जनता के अधिकारों** का सम्मान करे
सामान्य जनता नागरिक वर्ग से बाहर – उपद्रव का भय	अत्याचारी शासक को जनता **अपदस्थ** कर सकती है
योग्यता, संपन्नता व कुलीनता को प्राथमिकता; गरीबों को छोड़कर सभी नागरिकों का प्रतिनिधित्व	जनता अपनी पसंद के व्यक्ति को शासक बना सकती है
अभिजात/गणतंत्रात्मक दृष्टिकोण	**जन-अधिकार/प्रतिरोध** का दृष्टिकोण

2 संक्षेप में निबंध लिखिए

5 मानवतावादी विचारों के क्या अभिलक्षण थे ?

उत्तर : (i) **व्यक्ति की गरिमा** – मनुष्य अपने बारे में स्वयं निर्णय लेने में समर्थ; (ii) **प्राचीन यूनानी-रोमन ग्रंथों** का अध्ययन; (iii) **वाद-विवाद व चर्चा** पर बल (पिको देल्ला मिरांदोला); (iv) **धर्म का नियंत्रण कमज़ोर** – पर ज़रूरी नहीं कि अधार्मिक हों; (v) मनुष्य का **बहुमुखी स्वभाव** – सामंती तीन वर्गों के विचार के विरुद्ध; (vi) **इसी जीवन में सुख** व भौतिक संपत्ति, शक्ति व गौरव में रुचि; (vii) **अच्छे व्यवहार, कला व यथार्थ** की ओर झुकाव; (viii) 19वीं सदी में इतिहासकारों ने इसे 'मानवतावाद' नाम दिया।

6 सत्रहवीं शताब्दी के यूरोपियों को विश्व किस प्रकार भिन्न लगा ? उसका एक सुचिंतित विवरण दीजिए।

उत्तर : (i) **ब्रह्मांड** – पृथ्वी अब केंद्र नहीं; सूर्य-केंद्रित व्यवस्था; ग्रह दीर्घ वृत्ताकार मार्ग पर (कोपरनिकस, केप्लर, गैलीलियो); न्यूटन का **गुरुत्वाकर्षण**। (ii) **ज्ञान** – विश्वास की जगह **अवलोकन व प्रयोग**; रॉयल सोसायटी व पेरिस अकादमी। (iii) **धर्म** – प्रोटैस्टैंट सुधार से चर्च की एकता टूटी; व्यक्ति स्वयं धर्म चुन सकता है; प्रकृति ईश्वर का स्थान लेने लगी; 'दूरस्थ ईश्वर' की अवधारणा। (iv) **मनुष्य** – स्वतंत्र, विवेकशील व्यक्ति; निजी व सार्वजनिक क्षेत्र का भेद। (v) **पुस्तकें** – छपी पुस्तकों से ज्ञान आम लोगों तक। (vi) **पहचान** – भाषा के आधार पर अलग-अलग राज्य; अपनी आधुनिकता की तुलना प्राचीन यूनान-रोम से।

I क्रियाकलाप – संकेत उत्तर

क्रियाकलाप 1 – इटली का मानचित्र और वेनिस

प्रश्न : मानचित्र में वेनिस को ढूँढ़िए। आप नगर का वर्णन कैसे करेंगे? यह शहर किसी कथीड्रल नगर से कैसे भिन्न है?

संकेत : वेनिस इटली के उत्तर-पूर्व में एड्रियाटिक सागर के तट पर बसा **बंदरगाह नगर-राज्य** है – व्यापार से समृद्ध, **गणराज्य** (परिषद द्वारा शासित) और नहरों/पुलों वाला नगर। कथीड्रल नगर में चर्च/पादरी का प्रभुत्व और धर्माधिकारी राजनीतिक रूप से शक्तिशाली होते हैं, जबकि वेनिस में **धर्माधिकारी व सामंत कमज़ोर** थे और **व्यापारी/नागरिक शासन में सक्रिय**।

क्रियाकलाप 2 – वैज्ञानिक तत्त्व

प्रश्न : सोलहवीं शताब्दी ई. के इटली के कलाकारों की कृतियों के विभिन्न वैज्ञानिक तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

संकेत : रेखागणित (परिदृश्य/Perspective), **प्रकाश के गुणों** का अध्ययन (त्रि-आयामी रूप), **शरीर रचना विज्ञान** (वेसेलियस की चीर-फाड़), **भौतिकी**, **तेल-रंग का प्रयोग** (रसायन), **इंजीनियरिंग** (ब्रूनेलेशी का गुम्बद, लियोनार्दो की उड़न-मशीन)।

क्रियाकलाप 3 – महिलाओं की आकांक्षाएँ

प्रश्न : फ़ेदेले (महिला) और कास्टिल्योनी (पुरुष) द्वारा व्यक्त भावों की तुलना कीजिए। क्या महिलाओं का एक निर्दिष्ट वर्ग ही था?

संकेत : फ़ेदेले – महिलाओं को **हर प्रकार की शिक्षा** ग्रहण करनी चाहिए, शिक्षा से पहचान/स्वतंत्रता मिलती है। कास्टिल्योनी – स्त्री में **कोमलता, सहृदयता, स्त्रियोचित माधुर्य** हो, उसके गुण पुरुष-सदृश न हों; पुरुषों के 'आदर्श स्त्री' के विचार। **उत्तर :** नहीं, एक ही वर्ग नहीं – **अभिजात परिवार** की महिलाएँ (इसाबेला), **व्यापारी परिवार** की (कारोबार संभालने वाली), **विदुषी** (फ़ेदेले), और दहेज के अभाव में **मठों की भिक्षुणियाँ**।

क्रियाकलाप 4 – कैथलिक चर्च की आलोचना

प्रश्न : वे कौन-से मुद्दे थे जिनको लेकर प्रोटैस्टैंट धर्म के अनुयायी कैथलिक चर्च की आलोचना करते थे?

संकेत : (i) चर्च का **लालच** व जनता से **लूट-खसोट**; (ii) **पाप-स्वीकारोक्ति** से धन ठगना; (iii) अनावश्यक **कर्मकांड**; (iv) **पादरी की मध्यस्थता** की ज़रूरत – लूथर के अनुसार नहीं; (v) बाईबल केवल लातिनी में – **मातृभाषा में अनुवाद** की माँग (टिंडेल); (vi) राज-काज में चर्च की **दख़लअंदाज़ी** व 'कॉन्स्टैनटाइन का अनुदान'।

J रिक्त स्थान, सत्य/असत्य, मिलान

1 रिक्त स्थान भरिए

1. **'रेनेसाँ' का हिंदी अर्थ _____ है।**
   उत्तर : पुनर्जागरण

2. **बर्कहार्ट, जर्मन इतिहासकार _____ के विद्यार्थी थे।**
   उत्तर : लियोपोल्ड वॉन रांके

3. **इटली के नगर-राज्यों में फ़्लोरेंस और _____ गणराज्य थे।**
   उत्तर : वेनिस

4. **जोहानेस _____ ने 1455 में छापेखाने का निर्माण किया।**
   उत्तर : गूटेनबर्ग

5. **'अलमजेस्ट' ग्रंथ _____ का है।**
   उत्तर : टॉलेमी

6. **'द प्रिंस' (1513) के लेखक _____ हैं।**
   उत्तर : निकोलो मैक्यावेली

7. **1517 में _____ ने कैथलिक चर्च के विरुद्ध अभियान छेड़ा।**
   उत्तर : मार्टिन लूथर

8. **इग्नेशियस लोयोला के अनुयायी _____ कहलाए।**
   उत्तर : जेसुइट

9. **केप्लर के अनुसार ग्रह _____ मार्ग पर परिक्रमा करते हैं।**
   उत्तर : दीर्घ वृत्ताकार

10. **1662 में लंदन में _____ की स्थापना हुई।**
    उत्तर : रॉयल सोसायटी

2 सत्य / असत्य

1. **बर्कहार्ट के अनुसार इतिहास का सरोकार केवल राजनीति से है।**
   उत्तर : असत्य – संस्कृति से भी उतना ही है।

2. **वेनिस और जेनेवा सबसे जीवंत नगरों में थे।**
   उत्तर : सत्य

3. **जितने समय में गूटेनबर्ग की कार्यशाला में बाईबल की 150 प्रतियाँ छपीं, उतने में एक भिक्षु एक ही प्रति लिख पाता था।**
   उत्तर : सत्य

4. **मानवतावादी विषय पूरी तरह धार्मिक थे।**
   उत्तर : असत्य – वे धार्मिक नहीं थे।

5. **मानवतावादी विषय धीरे-धीरे स्कूलों में भी पढ़ाए जाने लगे।**
   उत्तर : सत्य

6. **लूथर ने आमूल परिवर्तनवाद का समर्थन किया।**
   उत्तर : असत्य – उन्होंने समर्थन नहीं किया।

7. **कोपरनिकस के अनुसार सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है।**
   उत्तर : असत्य – पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

8. **पुनर्जागरण काल में महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी बहुत अधिक थी।**
   उत्तर : असत्य – बहुत सीमित थी।

9 **'रेनेसाँ व्यक्ति' की अनेक रुचियाँ और हुनर होते थे।**

उत्तर : सत्य

10 **पुनर्जागरण में केवल यूनानी-रोमन सभ्यता का हाथ था।**

उत्तर : असत्य – एशिया, अरब आदि का भी योगदान।

3 मिलान कीजिए (रचना – रचनाकार)

क्र.	रचना
1	द प्रिंस
2	यूटोपिया
3	द कोर्टियर
4	ऑन ऐनॉटमी
5	कॉस्मोग्राफ़िकल मिस्ट्री
6	दि मोशन
7	ऑन दि डिग्निटी ऑफ़ मैन
8	नाइन्टी फाइव थिसेज़

अक्षर	रचनाकार
(क)	गैलीलियो
(ख)	पिको देल्ला मिरांदोला
(ग)	मार्टिन लूथर
(घ)	वेसेलियस
(ङ)	मैक्यावेली
(च)	केप्लर
(छ)	थॉमस मोर
(ज)	कास्टिल्योनी

उत्तर

1–(ङ) 2–(छ) 3–(ज) 4–(घ) 5–(च) 6–(क) 7–(ख) 8–(ग)

शुभकामनाएँ!

नियमित अभ्यास और दोहराव से सफलता मिलती है। और भी नोट्स, MCQ और टेस्ट के लिए जाएँ – **mcqwaale.in** | **Ask Your Solution Academy** – Suresh Raikwar